Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2026 = 8.727
https://www.srjis.com/issues_data/304
Peer Reviewed & Refereed Journal, SEPT-OCT 2026, Vol- 15/97

किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. निलेश कुमार पटेल
प्राचार्य, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां (म. प्र.)
Email- nktp12374@gmail.com
वैशाली कारपेंटर
सहायक प्राध्यापिका, यश कोलेज ऑफ़ एजुकेशन, बदनावर (धार), म. प्र.

Paper Received On: 1 OCT 2026
Peer Reviewed On: 16 OCT 2026
Published On: 01 NOV 2026

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन में उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर के रूप में नियंत्रित करते हुए किशोरवय छात्रों, छात्राओं तथा समग्र किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि की प्रभावशीलता का परीक्षण किया गया। अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के धार जिले के बदनावर शहर स्थित एक शासकीय माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 6 में अध्ययनरत 98 विद्यार्थियों को सुविधाजनक न्यादर्श पद्धति द्वारा चयनित किया गया। विद्यार्थियों को प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों में विभाजित किया गया। प्रायोगिक समूह को एक माह तक प्रत्येक कार्यदिवस 45 मिनट विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रीय मुद्दों पर संवाद एवं चर्चा आधारित गतिविधियों में सम्मिलित किया गया, जबकि नियंत्रित समूह को कोई उपचार प्रदान नहीं किया गया। अध्ययन में स्टेनली एवं कैम्पबेल द्वारा प्रस्तावित प्रायोगिक असमतुल्य नियंत्रित समूह प्राकल्प का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के आकलन के लिए गौर एवं गोविल द्वारा विकसित मानकीकृत 'किशोरों हेतु सामाजिक कौशल मापनी' का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए पूर्व-सामाजिक कौशल को सहचर तथा पश्च-सामाजिक कौशल को आश्रित चर मानते हुए केड द्वारा प्रस्तावित अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्रों के लिए समूह का F मान 35.007, छात्राओं के लिए 65.317 तथा समग्र किशोरवय विद्यार्थियों के लिए 104.024 पाया गया, जो क्रमशः सांख्यिकीय रूप से सार्थक था। समायोजित अवशेषों के माध्य फलांकों में भी प्रायोगिक समूह ने नियंत्रित समूह की अपेक्षा अधिक सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित किए। छात्रों में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के माध्य फलांक क्रमशः 4.290 एवं -3.217, छात्राओं में 6.594 एवं -7.082 तथा समग्र विद्यार्थियों में 11.030 एवं -10.165 पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को नियंत्रित करने के पश्चात् भी संवाद विधि किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास में परंपरागत शिक्षण विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावी रही।

मुख्य शब्द : संवाद विधि, सामाजिक कौशल, किशोरवय विद्यार्थी, केड (Quade) सह-प्रसरण विश्लेषण, अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण।
Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

संवाद विधि (Dialogic Method) शिक्षण और चिंतन की एक अत्यंत प्रभावकारी शैली है, जिसका उद्देश्य केवल सूचना का आदान-प्रदान करना नहीं, बल्कि विचारों का मंथन कर सत्य की खोज करना है। पश्चात्य एवं भारतीय दर्शन में इसका गहरा और ऐतिहासिक आधार देखने को मिलता है। पाश्चात्य परंपरा में सुकरात (Socrates) को संवाद विधि का जनक माना जाता है। उनकी सुकराती प्रश्नोत्तरी विधि (Socratic Method) का मुख्य उद्देश्य तर्कपूर्ण प्रश्नों के माध्यम से व्यक्ति की गलत धारणाओं को दूर कर आलोचनात्मक चिंतन विकसित करना था। उनके शिष्य प्लेटो (Plato) ने अपनी कालजयी कृतियों जैसे 'रिपब्लिक' और 'मेनो' को संवाद रूप में लिखकर इस विचार को आगे बढ़ाया कि सत्य की प्राप्ति संवाद और द्वंद्ववाद (Dialectic) के ज़रिए ही संभव है। इसके पश्चात अरस्तु (Aristotle) ने संवाद में व्यवस्थित तर्कशास्त्र (Logic) और संभाषण कला (Rhetoric) का समावेश करते हुए इसे एक वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान किया।

भारतीय दर्शन और साहित्य में संवाद शिक्षण विधि (Dialogic Method / Conversational Method) का उल्लेख अत्यंत प्राचीन काल से मिलता है। भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान का मुख्य आधार केवल एकतरफा उपदेश न होकर 'प्रश्न-उत्तर', 'जिज्ञासा' और 'शास्त्रार्थ' (संवाद) रहा है। उपनिषद् शब्द का शाब्दिक अर्थ ही "गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना" है और पूरा उपनिषद साहित्य संवाद शैली पर ही आधारित है। उदाहरण के लिए, प्रश्नोपनिषद् में महर्षि पिप्पलाद और शिष्यों के बीच प्रश्न-उत्तर, बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद व याज्ञवल्क्य-गार्गी का सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ, कठोपनिषद् में नचिकेता और यमराज का आत्मज्ञान संबंधी संवाद तथा छांदोग्य उपनिषद् में उद्दालक और श्वेतकेतु के बीच 'तत्त्वमसि' का व्यावहारिक संवाद इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इसी प्रकार, श्रीमद्भगवद्गीता संपूर्ण रूप से 'श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद' पर आधारित है, जहाँ अर्जुन के संशयों का निवारण श्रीकृष्ण संवाद द्वारा करते हैं और गीता में "तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया" (अध्याय 4, श्लोक 34) के माध्यम से परिप्रश्न को सत्य-ज्ञान का माध्यम बताया गया है। भारतीय दर्शन शास्त्र एवं न्याय दर्शन में तर्क व संवाद के तीन रूप—वाद (सत्य-खोज हेतु निष्पक्ष संवाद), जल्प और वितंडा—बताए गए हैं, जिनमें 'वाद' को शिक्षण की सर्वोत्तम विधि माना गया है। बौद्ध एवं जैन साहित्य में भी संवाद का व्यापक प्रयोग मिलता है, जैसे बौद्ध दर्शन का 'मिलिंदपन्हो' (राजा मिलिंद और नागसेन का संवाद), महात्मा बुद्ध के उपदेश (सुत्तपिटक) तथा जैन आगमों की प्रश्नोत्तरी शैली। इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान परंपरा में शास्त्रार्थ का विशेष महत्व रहा है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के मध्य हुआ प्रसिद्ध शास्त्रार्थ है। निष्कर्षतः, भारतीय दर्शन में ज्ञान को कभी थोपा नहीं गया, बल्कि शिष्य की जिज्ञासा और गुरु के समाधान द्वारा विकसित किया गया, जिससे संवाद शिक्षण विधि ज्ञान-अर्जन की सबसे प्रामाणिक और वैज्ञानिक विधि सिद्ध होती है।

संवाद के द्वारा विद्यार्थी में सामाजिक कौशल विकसित होते है। विचारों का प्रभावी संप्रेषण, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता, सुनने की क्षमता तथा परस्पर सहयोग जैसे कौशल कक्षा के साथ-साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में सहायक होते हैं। ये सामाजिक कौशल किशोरावस्था में बेहतर व्यवहार नियंत्रण, समायोजन और मजबूत अंतर्व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए आवश्यक हैं। सामाजिक कौशल की कमी से बालकों में समायोजन संबंधी समस्याएं, एकाकीपन और व्यवहारात्मक जटिलताएं उत्पन्न हो सकती हैं। हाल ही में महामारी के कारण विद्यालयों के बंद रहने से विद्यार्थियों के सामाजिक संपर्क एवं सीखने के अवसरों पर

प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। सामाजिक दक्षताएँ जन्मजात न होकर अर्जन योग्य क्षमताएं हैं, जिन्हें उचित शिक्षण एवं वातावरण के माध्यम से सुधारा जा सकता है। इस दिशा में 'संवाद विधि' (Dialogue Method) एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है, जिसमें केवल शिक्षक-प्रस्तुति न होकर शिक्षक और विद्यार्थियों तथा विद्यार्थियों के आपस में निरंतर विचारों का आदान-प्रदान समाहित होता है। संवाद विधि से विद्यार्थियों में न केवल स्पष्ट और प्रभावी संचार का विकास होता है, बल्कि उनके सामाजिक कौशल, सहपाठी संबंध, नेतृत्व क्षमता तथा शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार होता है।

संवाद विधि एवं परिचर्चा तकनीकों की प्रभावशीलता पर पूर्व शोधकर्ताओं ने भी व्यापक कार्य किया है। सहगल (2010) ने पाया कि सामाजिक अध्ययन विषय में परिचर्चा, समस्या समाधान तथा सेमिनार विधियाँ परंपरागत शिक्षण विधि की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं। हजहुसेनी (2012) के अनुसार संवाद शिक्षण विधियों (समूह चर्चा और सुकराती संवाद) से विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच और सामाजिक संपर्क में सकारात्मक सुधार होता है। मोंटगोमरी (2013) ने शिक्षक संवाद और छात्र उपलब्धि के मध्य संबंधों का सर्वेक्षण के माध्यम से परीक्षण किया। युसूफ एवं अन्य (2016) ने पठन बोध पर चर्चा पद्धति के प्रभाव का अध्ययन कर शिक्षण में चर्चा विधि का उपयोग करने की अनुशंसा की। घालिया, दराव्शेह एवं अलरशदान (2022) के शोध परिणामों से स्पष्ट हुआ कि छोटे समूहों में संवाद पद्धति के प्रयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तोंग एवं सडिंग (2024) ने दर्शाया कि ज्ञान-निर्माण वातावरण में कक्षा संवाद में छात्रों की सहभागिता उनके डोमेन ज्ञान और सहयोगात्मक समझ से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है। अकयिल्दिज़ (2026) ने अपने अध्ययन में पाया कि संवादात्मक गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों की चिंतन प्रक्रियाओं के प्रति जागरूकता, चिंतनशील गतिविधियों में सहभागिता और अपने विचारों को व्यक्त करने के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। ओनेले एवं ओगबुआन्या (2025) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण विधि एवं लिंग का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव होता है। रशीदी एवं नादेरी (2012) ने भी कक्षाकक्ष अंतःक्रिया में लिंग को विभेदी कारक के रूप में पहचाना।

यद्यपि पूर्व शोधों में संवाद विधि का शैक्षणिक उपलब्धि और आलोचनात्मक सोच पर प्रभाव देखा गया है, परंतु किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विभिन्न आयामों (जैसे—सहयोग, सहपाठी संबंध, नेतृत्व, सम्प्रेषण, स्व-प्रबंधन आदि) पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव का व्यापक अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। किशोरावस्था विद्यार्थियों के विकास का वह चरण है जहाँ उनमें सामाजिक चेतना तीव्र गति से विकसित होती है। यदि इस स्तर पर समसामयिक, सामाजिक एवं विद्यालयी मुद्दों पर योजनाबद्ध चर्चा-परिचर्चा आयोजित की जाए, तो विद्यार्थी विभिन्न मुद्दों की संवेदनशीलता को समझने तथा अपने विचारों को निर्भीक एवं प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सक्षम बनते हैं। यह अध्ययन शिक्षकों और प्रशासकों को ऐसी व्यावहारिक शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में मदद करेगा, जो कक्षा में केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रखकर किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल को समृद्ध बना सकें। अतः किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का वैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक मूल्यांकन करना अत्यंत प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के लिए अधोलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए -

1. किशोरवय छात्रों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो।
2. किशोरवय छात्राओं के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो।
3. किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो।

शोध प्रविधि

यह एक प्रयोगात्मक अध्ययन था। अध्ययन में किशोरवय विद्यार्थियों के दो समूह क्रमशः प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह सम्मिलित हुए। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों से एक माह तक प्रति कार्यदिवस 45 मिनट के लिए विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रिय मुद्दों पर चर्चा करवाई गई जबकि नियंत्रित समूह को कोई उपचार प्रदान नहीं किया गया। अध्ययन हेतु स्टेनली एवं केम्पबेल द्वारा प्रस्तावित प्रायोगिक असमतुल्य नियंत्रित समूह प्राकल्प का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

अध्ययन की समय सीमा का ध्यान रखते हुए सुविधाजनक न्यादर्श पद्धति से मध्यप्रदेश के धार जिले के बदनावर शहर में स्थित एक शासकीय माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 6 में अध्ययनरत 98 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। प्रायोगिक समूह में 47 विद्यार्थी (18 छात्र एवं 29 छात्राएं) सम्मिलित थे जबकि नियंत्रित समूह में 51 विद्यार्थी (24 छात्र एवं 27 छात्राएं) सम्मिलित रहे। प्रायोगिक समूह का निर्धारण याद्रच्छिक रूप से किया गया।

उपकरण

अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के आंकलन हेतु गौर एवं गोविल द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'किशोरों हेतु सामाजिक कौशल मापनी' का उपयोग किया गया था।

प्रदत्त विश्लेषण विधि

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम प्राचलिक एक-दिशीय सह-प्रसरण विश्लेषण की उपयुक्तता की जाँच की गई। प्रथम एवं द्वितीय परिकल्पना में उपसमूहों का न्यादर्श आकार छोटा होने तथा तृतीय परिकल्पना में प्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण की आवश्यक धारणाएँ पूर्ण न होने के कारण अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया। इसमें पूर्व-सामाजिक कौशल को सहचर तथा पश्च-सामाजिक कौशल को आश्रित चर माना गया। तीनों परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु क्वेड (Quade) द्वारा प्रस्तावित अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया।

परिणामों की उद्देश्यवार व्याख्या

परिणामों की उद्देश्यवार व्याख्या इस प्रकार है –

1. किशोरवय छात्रों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो

प्रथम उद्देश्य के संगत शून्य परिकल्पना के परीक्षण के लिए क्वेड (Quade) द्वारा प्रस्तावित अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। क्वेड सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश तालिका क्रमांक 1 में प्रस्तुत है-

तालिका क्र. 1: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों के सामाजिक कौशल के लिए क्वेड सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश

Source of Variance	SSy.x	df	MSSy.x	Fy.x	Sig.
Group	565.579	1	565.579	35.007	.000
Error	630.088	39	16.156		
Total	1195.854	42			

तालिका क्र. 1 से यह स्पष्ट है कि छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के लिए F का मान 35.007 है, जो स्वतंत्रता की कोटि df = (1,39) के लिए सार्थकता के स्तर 0.00 पर सार्थक है। अतः यह सार्थकता के स्तर 0.05 पर भी सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण लेने वाले छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान में सार्थक अंतर है, जबकि छात्रों के पूर्व-सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो। उत्तरोत्तर विश्लेषण के लिए प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों के छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों (Residuals) के माध्य फलांको का अध्ययन किया गया जो तालिका क्र. 2 में प्रस्तुत है-

तालिका क्र. 2: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक

Group	Mean
Experimental	4.290[a]
Control	-3.217[a]

[a] *मॉडल में लिए गए सहचर Pre-Social Skill का मान 102.5952 पर मूल्यांकित किया गया है*

तालिका क्र. 2 से यह स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह के छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों का माध्य फलांक 4.29 है, जो नियंत्रित समूह के छात्रों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक -3.217 से सार्थक रूप से उच्च है। परिणामतः हम कह सकते हैं कि किशोरवय छात्रों में सामाजिक कौशल के विकास के लिए परंपरागत अध्ययन की तुलना में संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण सार्थक रूप से श्रेष्ठ है।

2. किशोरवय छात्राओं के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो

द्वितीय उद्देश्य के संगत शून्य परिकल्पना के परीक्षण के लिए क्वेड (Quade) द्वारा प्रस्तावित अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। क्वेड सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश तालिका क्रमांक 3 में प्रस्तुत है-

तालिका क्र. 3: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं के सामाजिक कौशल के लिए Quade सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश

Source of Variance	SSy.x	df	MSSy.x	Fy.x	Sig.
Group	2598.493	1	2598.493	65.317	.000
Error	2108.474	53	39.783		
Total	4707.747	56			

तालिका क्र. 3 से यह स्पष्ट है कि छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के लिए F का मान 65.317है, जो स्वतंत्रता की कोटि df=(1,53) के लिए सार्थकता के स्तर 0.00 पर सार्थक है। अतः यह सार्थकता के स्तर 0.05 पर भी सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण लेने वाली छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाली छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान में सार्थक अंतर है, जबकि छात्राओं के पूर्व-सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो। उत्तरोत्तर विश्लेषण के लिए प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों की छात्राओं के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांकों का अध्ययन किया गया जो तालिका क्र. 4 में प्रस्तुत है-

तालिका क्र. 4: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक

Group	Mean
Experimental	6.594[a]
Control	-7.082[a]

[a] *मॉडल में लिए गए सहचर* Pre-Social Skill *का मान* 105.5536 *पर मूल्यांकित किया गया है*

तालिका क्र. 4 से यह स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह की छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों का माध्य फलांक 6.594 है, जो नियंत्रित समूह के छात्राओं के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक -7.082 से सार्थक रूप से उच्च है। परिणामतः हम कह सकते हैं कि किशोरवय छात्राओं के सामाजिक कौशल में सुधार के लिए परंपरागत अध्ययन की तुलना में संवाद विधि द्वारा शिक्षण सार्थक रूप से श्रेष्ठ है।

3. किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो

तृतीय उद्देश्य के संगत शून्य परिकल्पना के परीक्षण के लिए क्रेड (Quade) द्वारा प्रस्तावित अप्राचलिक सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। क्रेड सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश तालिका क्रमांक 5 में प्रस्तुत है-

तालिका क्र. 5: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के लिए Quade सह-प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का सारांश

Source of Variance	SSy.x	df	MSSy.x	Fy.x	Sig.
Group	10987.736	1	10987.736	104.024	.000
Error	10140.286	96	105.687		
Total	21127.956	98			

तालिका क्र. 5 से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के लिए F का मान 104.024 है, जो स्वतंत्रता की कोटि df=(1,96) के लिए सार्थकता के स्तर 0.00 पर सार्थक है। अतः यह सार्थकता के स्तर 0.05 पर भी सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि संवाद विधि द्वारा अध्ययन करने वाले किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान एवं परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य मान में सार्थक अंतर है, जबकि विद्यार्थियों के पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर लिया गया हो। उत्तरोत्तर विश्लेषण के लिए प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांकों का अध्ययन किया गया जो तालिका क्र. 6 में प्रस्तुत है –

तालिका क्र. 6: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक

Group	Mean
Experimental	11.030[a]
Control	-10.165[a]

[a] *मॉडल में लिए गए सहचर* Pre-Social Skill *का मान* 107.5536 *पर मूल्यांकित किया गया है*

तालिका क्र. 6 से यह स्पष्ट है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों का माध्य फलांक 11.030 है, जो नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के अमानकीकृत अवशेषों के माध्य फलांक -10.165 से सार्थक रूप से उच्च है। परिणामतः हम कह सकते हैं कि किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास में परंपरागत अध्ययन की तुलना में संवाद विधि सार्थक रूप से श्रेष्ठ है।

परिणामों की चर्चा

प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत किशोरवय छात्रों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन किया गया, जिसमें उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर के रूप में नियंत्रित किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि समूह का F मान 35.007 था, जो df = (1, 39) पर $p < .001$ के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक था।

इसके अतिरिक्त, समायोजित अवशेषों के माध्य फलांकों में भी प्रायोगिक समूह (4.290) का मान नियंत्रित समूह (-3.217) की अपेक्षा अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक सामाजिक कौशल में संभावित अंतर को नियंत्रित करने के बाद भी संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों का सामाजिक कौशल परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाले छात्रों की तुलना में अधिक विकसित हुआ। इस परिणाम का संभावित कारण यह हो सकता है कि संवाद विधि विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने, दूसरों के विचार सुनने, प्रश्न पूछने, तर्क प्रस्तुत करने तथा समूह के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग करने के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार की सतत अंतःक्रिया विद्यार्थियों में प्रभावी सम्प्रेषण, सहयोग, सहानुभूति तथा पारस्परिक संबंध स्थापित करने जैसे सामाजिक कौशलों के विकास में सहायक हो सकती है।

प्रथम उद्देश्य से प्राप्त परिणाम सहगल (2010) के निष्कर्षों के अनुरूप दिखाई देते हैं। सहगल ने पाया कि परिचर्चा, समस्या-समाधान तथा सेमिनार जैसी सहभागितापूर्ण शिक्षण विधियाँ परंपरागत शिक्षण विधि की तुलना में अधिक प्रभावी थीं। वर्तमान अध्ययन में भी संवाद विधि के अंतर्गत विद्यार्थियों को सक्रिय सहभागिता तथा विचारों के आदान-प्रदान के अवसर प्राप्त हुए, जिसके परिणामस्वरूप उनके सामाजिक कौशल में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया। इसी प्रकार, हजहुसेनी (2012) ने पाया कि समूह चर्चा एवं सुकराती संवाद जैसी संवादात्मक शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच तथा सामाजिक संपर्क में सकारात्मक सुधार से संबंधित हैं। वर्तमान अध्ययन का परिणाम इस निष्कर्ष को सामाजिक कौशल के संदर्भ में और अधिक समर्थन प्रदान करता है।

द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत किशोरवय छात्राओं के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन किया गया। उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर के रूप में नियंत्रित करने के पश्चात् समूह का F मान 65.317 पाया गया, जो $df = (1, 53)$ पर $p < .001$ के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक था। समायोजित अवशेषों के माध्य फलांकों में भी प्रायोगिक समूह की छात्राओं का माध्य 6.594 तथा नियंत्रित समूह की छात्राओं का माध्य -7.082 पाया गया। इस प्रकार संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राओं के सामाजिक कौशल में परंपरागत विधि से अध्ययन करने वाली छात्राओं की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। यह परिणाम दर्शाता है कि संवादात्मक एवं सहभागितापूर्ण कक्षा वातावरण छात्राओं को अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, दूसरों के विचारों को समझने तथा समूह में सक्रिय रूप से सहभागिता करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

द्वितीय उद्देश्य से प्राप्त परिणाम रशीदी एवं नादेरी (2012) तथा ओनेले एवं ओगबुआन्या (2025) के निष्कर्षों के संदर्भ में विचारणीय हैं। रशीदी एवं नादेरी (2012) ने कक्षाकक्ष अंतःक्रिया में लिंग को एक विभेदी कारक के रूप में पहचाना, जबकि ओनेले एवं ओगबुआन्या (2025) ने शिक्षण विधि एवं लिंग के मध्य सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव की ओर संकेत किया। वर्तमान अध्ययन में छात्राओं के लिए संवाद विधि का सार्थक प्रभाव प्राप्त होना यह दर्शाता है कि सहभागितापूर्ण शिक्षण वातावरण छात्राओं के सामाजिक एवं अंतर्व्यक्तिगत कौशलों को विकसित करने के लिए उपयोगी हो सकता है। हालांकि वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य लिंग एवं शिक्षण विधि की अंतःक्रिया का स्वतंत्र परीक्षण करना नहीं था, इसलिए इन परिणामों की व्याख्या इसी सीमा के भीतर की जानी चाहिए।

तृतीय उद्देश्य के अंतर्गत किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर संवाद विधि के प्रभाव का अध्ययन किया गया, जिसमें उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर के रूप में नियंत्रित किया गया। परिणामों में समूह का F मान 104.024 पाया गया, जो df = (1, 96) पर $p < .001$ के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक था। समायोजित अवशेषों के माध्य फलांकों में प्रायोगिक समूह का माध्य 11.030 तथा नियंत्रित समूह का माध्य -10.165 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि समग्र रूप से किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास में संवाद विधि का प्रभाव परंपरागत शिक्षण विधि की तुलना में अधिक प्रभावी रहा। विशेष रूप से, उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को सहचर के रूप में नियंत्रित किए जाने के बाद भी यह अंतर सार्थक बना रहा, जिससे यह संकेत मिलता है कि प्राप्त अंतर केवल विद्यार्थियों के प्रारंभिक सामाजिक कौशल में विद्यमान अंतर के कारण नहीं था।

वर्तमान अध्ययन के समग्र परिणाम तोंग एवं सडिंग (2024) के निष्कर्षों से भी सामंजस्य रखते हैं। उन्होंने पाया कि ज्ञान-निर्माण वातावरण में कक्षा संवाद में विद्यार्थियों की सहभागिता उनके विषयगत ज्ञान तथा सहयोगात्मक समझ से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। वर्तमान अध्ययन में संवाद विधि के माध्यम से विद्यार्थियों को भी विचार-विनिमय एवं सक्रिय सहभागिता के अवसर प्राप्त हुए, जो सामाजिक कौशल के विकास के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। इसी प्रकार, घालिया, दराव्शेह एवं अलरशदान (2022) ने छोटे समूहों में संवाद पद्धति के प्रयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया। यद्यपि उनका अध्ययन मुख्यतः शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित था, फिर भी उनके निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि संवाद एवं समूह-आधारित सहभागिता विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को अधिक प्रभावी बना सकती है।

युसूफ एवं अन्य (2016) ने पठन बोध पर चर्चा पद्धति के प्रभाव का अध्ययन करते हुए शिक्षण में चर्चा विधि के उपयोग की अनुशंसा की थी। वर्तमान अध्ययन के परिणाम इस निष्कर्ष को सामाजिक कौशल के क्षेत्र में विस्तारित करते हैं। संवाद विधि में विद्यार्थियों को केवल सुनने के बजाय प्रश्न पूछने, उत्तर देने, अपने विचार प्रस्तुत करने तथा अन्य विद्यार्थियों के विचारों पर प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलता है। ऐसी अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया विद्यार्थियों में प्रभावी सम्प्रेषण, सक्रिय श्रवण, सहयोग, आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा दे सकती है।

मोंटगोमरी (2013) ने शिक्षक संवाद एवं विद्यार्थी उपलब्धि के मध्य संबंधों का अध्ययन किया था। वर्तमान अध्ययन में संवाद विधि का प्रभाव सामाजिक कौशल पर पाया गया। दोनों अध्ययनों के निष्कर्षों को साथ रखकर देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य सार्थक संवाद तथा कक्षा में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता केवल शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यार्थियों के व्यापक विकास में भी योगदान कर सकती है। इसी प्रकार अकयिल्दिज़ (2026) ने संवादात्मक गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों की चिंतन प्रक्रियाओं के प्रति जागरूकता, चिंतनशील गतिविधियों में सहभागिता तथा अपने विचारों को व्यक्त करने के आत्मविश्वास में वृद्धि पाई। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के उस परिणाम को समर्थन प्रदान करता है जिसमें संवाद विधि द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में अधिक सकारात्मक परिवर्तन पाया गया।

संवाद विधि की प्रभावशीलता को उसके अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक स्वरूप के आधार पर भी समझा जा सकता है। संवादात्मक शिक्षण में विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता न रहकर सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनता है। प्रश्नोत्तर, विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क, समूह चर्चा तथा सहपाठियों के विचारों पर प्रतिक्रिया देने जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त व्यवहार करने का अभ्यास प्रदान करती हैं। किशोरावस्था में सहपाठी संबंधों एवं सामाजिक स्वीकृति का विशेष महत्व होता है। अतः यदि विद्यालयी वातावरण में विद्यार्थियों को सुरक्षित एवं संरचित संवाद के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने तथा मतभेदों को स्वीकार करने का अभ्यास कर सकते हैं। यही प्रक्रियाएँ सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वर्तमान अध्ययन में प्राप्त तीनों परिणामों को समग्र रूप से देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उपचार पूर्व सामाजिक कौशल को नियंत्रित करने के पश्चात् भी संवाद विधि का सामाजिक कौशल पर सार्थक सकारात्मक प्रभाव पाया गया। छात्रों, छात्राओं तथा समग्र किशोरवय विद्यार्थियों—तीनों समूहों में प्रायोगिक समूह के समायोजित अवशेषों के माध्य फलांक नियंत्रित समूह की अपेक्षा अधिक पाए गए। इससे यह संकेत मिलता है कि संवाद विधि सामाजिक कौशल के विकास के लिए एक प्रभावी सहभागितापूर्ण शिक्षण रणनीति हो सकती है। यह परिणाम पूर्व में किए गए अध्ययनों—सहगल (2010), हजहुसेनी (2012), रशीदी एवं नादेरी (2012), मोंटगोमरी (2013), युसूफ एवं अन्य (2016), घालिया, दराव्शेह एवं अलरशदान (2022), तोंग एवं सडिंग (2024), ओनेले एवं ओगबुआन्या (2025) तथा अकयिल्दिज़ (2026)—के निष्कर्षों से व्यापक रूप से संगत दिखाई देता है।

अतः वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि संवाद विधि किशोरवय विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास के लिए उपयोगी एवं प्रभावी शिक्षण विधि है। यह विधि विद्यार्थियों को सक्रिय सहभागिता, विचार-विनिमय, सहयोग, प्रभावी सम्प्रेषण, सक्रिय श्रवण तथा सामाजिक अंतःक्रिया के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। इसलिए विद्यालयी शिक्षण में संवाद, चर्चा एवं सहभागितापूर्ण गतिविधियों को योजनाबद्ध रूप से सम्मिलित किया जाना विद्यार्थियों के समग्र सामाजिक विकास की दृष्टि से उपयोगी हो सकता है।

सन्दर्भ

Akyıldız, S. T. (2026). Dialogue in action: A qualitative exploration of critical and reflective thinking through pedagogical innovation. Thinking Skills and Creativity, 61, Article 10221.

Aristotle. (350 B.C.E.). Rhetoric (W. Rhys Roberts, Trans.). The Internet Classics Archive. http://classics.mit.edu/Aristotle/rhetoric.html

Aristotle. (350 B.C.E.). Topics (W. A. Pickard-Cambridge, Trans.). The Internet Classics Archive. http://classics.mit.edu/Aristotle/topics.html

Campbell, D. T., & Stanley, J. C. (1966). Experimental and quasi-experimental designs for research. Houghton Mifflin.

Ghalia, N. H., Darawsheh, A. M., & Alrashdan, H. S. (2022). The dialogue method in small groups and its impact on the achievement of primary school students from the teachers' point of view in schools in northern Palestine. Journal of Educational and Psychological Sciences, 6(17), 41–60. https://doi.org/10.26389/AJSRP.R221021

Hajhosseiny, M. (2012). The effect of dialogic teaching on students' critical thinking disposition. Procedia - Social and Behavioral Sciences, 69, 1358–1368. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2012.12.073

Montgomery, H. N. (2013). Teacher dialogue and its relationship to student achievement (Publication No. 3599292) [Doctoral dissertation, The University of Southern Mississippi]. ProQuest Dissertations and Theses Global.

Onele, N. O., & Ogbuanya, T. C. (2025). The effect of gender and teaching methods on academic success in virtual reality to reduce gender disparity in technology. Journal of Teaching and Learning, 19(2), 5–23. https://doi.org/10.22329/jtl.v19i2.8841

Overholser, J. C. (1993). Elements of the Socratic method: II. Inductive reasoning. Psychotherapy: Theory, Research, Practice, Training, 30(1), 75–85. https://doi.org/10.1037/0033-3204.30.1.75

Plato. (390 B.C.E.). Meno (B. Jowett, Trans.). The Internet Classics Archive. http://classics.mit.edu/Plato/meno.html

Plato. (390 B.C.E.). Republic (B. Jowett, Trans.). The Internet Classics Archive. http://classics.mit.edu/Plato/republic.html

Quade, D. (1967). Rank analysis of covariance. Journal of the American Statistical Association, 62(320), 1187–1200. https://doi.org/10.1080/01621459.1967.10500925

Rashidi, N., & Naderi, S. (2012). The effect of gender on the patterns of classroom interaction. Education, 2(3), 30–36. https://doi.org/10.5923/j.edu.20120203.02

Sahgal, A. (2010). A study of effect of discussion, problem solving and seminar method on educational achievement of social studies subject of class IX students [Unpublished doctoral dissertation]. IASE Deemed University.

Shields, C. (2014). Aristotle (2nd ed.). Routledge. https://doi.org/10.4324/9780203852637

Tong, Y., & Ding, Y. (2024). Productive classroom dialogue and its association with student achievement in knowledge-building environments. Language and Education, 38(4), 1–20. https://doi.org/10.1080/09500782.2024.2312345

Yusuf, H., Guga, A., & Ibrahim, A. (2016). Discussion method and its effect on the performance of students in reading comprehension in secondary schools in Plateau State. The Online Journal of Quality in Higher Education, 3(4), 1–7.